फरीदाबाद
मजदूर समाचार
मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

★ Reflections on Marx's Critique of Political Economy
★ a ballad against work
★ Self Activity of Wage-Workers: Towards a Critique of Representation & Delegation
The books are free

नई सीरीज नम्बर 145 जुलाई 2000

निराशा हैं आशा की किरण

– आशा थी कि नौकरी करेंगे, कमायेंगे, बच्चों को पढायेंगे- लिखायेंगे, बच्चे बढिया नौकरियाँ करेंगे, अपने फुरसत रहेगी, मौज करेंगे।
– 36 जगह नौकरी कर ली, 36 धन्धे करके देख लिया रोटी मिलनी ही भारी हो गई है बाकी की तो उम्मीद ही छोड़ दी।

जँगल की आग

मजदूरों- मेहनतकशों को चीरती- काटती- निचोड़ती वर्तमान व्यवस्था तीव्र से तीव्रतर गति से जीवन के स्रोतों को अपने शिकंजों में कसती जा रही है। और, स्वयं को टिकाये रखने के लिये व्यवस्था की अपनी जरूरत है मजदूरों- मेहनतकशों की अपने ऊपर आस बनाये रखना।

वर्तमान व्यवस्था द्वारा शिक्षा- दीक्षा- प्रचार में झोंके जाते साधनों की व्यापक मात्रा का असर यह रहा है कि जँगल में लगी आग के दृष्टिगत भी बड़ी सँख्या में हम आस के पँछी बन तिनके दर तिनके टटोलते- बटोरते घौंसले बनाने में जुटते रहे हैं।

लेकिन वर्तमान व्यवस्था का दावानल सब कुछ भस्म करता जाता है। बढती सँख्या में.....

आस निरास भई

दरअसल आमतौर पर इसी व्यवस्था में सब ठीक करने के लिये हम हाथ- पैर मारते हैं। नहीं ठीक हो पाता तब निराशा वाली बात आती है।

"ठीक" इतना कम हो रहा है, बल्कि "गलत" इस कदर हो रहा है कि निराशा ही निराशा दिखाई देने लगी हैं। गहन- गहरी व्यापक- चौतरफा निराशा....

– जितना चाहे कर लो कुछ नहीं होता।
– कहीं कुछ नहीं है, सब बेकार हैं।
– सारी दुनिया का ही यह हाल है।

सम्पूर्ण पृथ्वी पर छाई घटाटोप निराशा वर्तमान व्यवस्था के सेफ्टी वाल्वों को जाम कर रही हैं। आस का इस कदर टूटना वर्तमान व्यवस्था के लिये खतरे की घँटियाँ, मौत के घड़ियाल हैं....

लड़खड़ाता खोखलापन

अन्तिम साँसें ले रही वर्तमान व्यवस्था अपने खोखलेपन को छिपाने और मजदूरों- मेहनतकशों को गुमराह करने व नैतिक तौर पर कमजोर करने के लिये कुतर्क पर कुतर्क गढ रही है, फैला रही है:

– वर्तमान व्यवस्था के दो सौ साल के दौर में जोड़ियों द्वारा बच्चे कम पैदा करने की प्रवृति बच्चे नहीं पैदा करने तक पहुँच गई है पर कुतर्क है: बच्चे ज्यादा पैदा करते हैं इसलिये गरीब तो होंगे ही।

– दो- ढाई साल के शिशुओं को प्री- नर्सरी साँचों में कसने तक पहुँच गये हैं पर कुतर्क है: लोग अनुशासन में ही नहीं रहते तो कोई क्या करे।

– इन दो सौ साल में पहर से घण्टे पर आये, घण्टे से मिनट होते हुये सैकेन्ड के हिसाब से उत्पादन पर पहुँच गये हैं और वर्ष में एक फसल- तीन महीने काम से पूरी साल काम में जोत दिये गये हैं पर कुतर्क है: लोग मेहनत नहीं करते, कोई सरकार क्या करे।

– इन दो सौ साल में महीना- भर चलने वाले उत्सव घण्टों में सिकुड़ गये हैं, हफ्ते- दस दिन का अतिथि- सत्कार हैलो- हाय व चाय की प्याली में सिमट गया है पर कुतर्क है: लोग ताम- झाम में बहुत खर्च करने लगे हैं, ऐशो- आराम पसन्द हो गये हैं, रोज नई- नई इच्छायें पैदा हो जाती हैं.... पूर्ति कैसे हो सकती है।

विकल्प..... विकल्प

वर्तमान व्यवस्था के लड़खड़ाते खोखलेपन ने हमारे लिये विकल्पों के प्रश्नों पर चर्चाओं को अर्जेन्ट बना दिया है। मण्डी- मार्केट, रुपये- पैसे- मुद्रा, प्रगति- विकास, महानगर- नगर- गाँव, ऊँच- नीच से पार कैसे पायें? इनके विकल्प क्या- क्या हो सकते हैं?

औकात वाले थोथे हैं – बार- बार अनुभवों में उभरते इस तथ्य को ध्यान में रखने की जरूरत है। हमारे विचार से वर्तमान व्यवस्था के विकल्पों के लिये मजदूरों के कदम और बातें अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इस सन्दर्भ में प्रस्थान बिन्दू हैं: 'इस मजदूर ने यह कहा और उस मजदूर ने वह कहा' को जानना और उन पर चर्चायें करना। (जारी)

धीरे काम करो

अनुभव–समझ–नये अनुभव

लिसनेवल ऑटोलेक मजदूर : "3-4 साल से लगातार फैक्ट्री में काम कर रहे 60 के करीब वरकरों से अचानक मैनेजमेन्ट ने कहा कि ठेकेदार के वरकर वाले फार्म भरो। दबाव के लिये गेट रोकने जैसे हथकण्डे मैनेजमेन्ट ने अपनाये। कुछ वरकरों ने फार्म भर दिये। इधर सैक्टर 24 के ऑटोलेक इग्निशन से मैनेजमेन्ट ने काम नहीं है कह कर वरकरों को यहाँ ट्रान्सफर करना शुरू किया है। संग- संग यहाँ से उन वरकरों को निकाला जा रहा है जिन्होंने दबाव में आ कर, नौकरी में बने रहने के नाम पर ठेकेदार के वरकर वाले फार्म भर दिये थे। मैनेजमेन्ट की सारी धौंस- धपट्टी के बावजूद जिन वरकरों ने फार्म नहीं भरे उन्हें मैनेजमेन्ट अब कुछ नहीं कह रही और वे नौकरी कर रहे हैं।"

ऑटोलैम्प वरकर : "अब जैसी दिक्कतें हमें पहले नहीं हुई। कम्पनी में इस समय काम काफी कम है। थोड़ी- सी कोई बात पर भी मैनेजमेन्ट दो- चार दिन के लिये वरकरों को बाहर कर देती है – अपना काम खत्म होने पर अथवा पीछे से मैटेरियल नहीं पहुँचने पर अपनी मशीन पर थोड़ा बैठ जाने पर सस्पैन्ड। यह जानबूझ कर किया जा रहा है। हम जानते हैं कि लीडर मैनेजमेन्ट से मिले हुये हैं इसलिये कम ही वरकर उनसे कुछ कहते हैं पर कोई कह भी देती- देता है तो लीडर कुछ नहीं करते। हम समझ रहे हैं कि आर्डर नहीं हैं ऐसे में कम्पनी कुछ करने के लिये हमें भड़काने की कोशिशें कर रही है। हम शान्त व चुप रह कर मैनेजमेन्ट का मुकाबला कर रहे हैं। और क्या- कुछ है जो हम कर सकते हैं?"

निकी ताशा (हिल्टा) मजदूर : "फैक्ट्री में इस समय काम ढीला चल रहा है क्योंकि यहाँ एस्कोर्ट्स का माल बनता है और वहाँ काम मन्दा है। कम्पनी ने साल पर 107 दिन के पैसे का वी आर एस का नोटिस लगा रखा है पर कोई भी मजदूर इस्तीफा नहीं दे रहा। पहले जो वी आर एस में नौकरी छोड़ गये वे ही पछता रहे हैं।"

मितासो डोमेस्टिक वरकर : "सब मजदूर जानते हैं कि हमारे साथ गलत हो रहा है। मैनेजमेन्ट और लीडर जो कर रहे हैं वह हमारे

(बाकी पेज दो पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

दर्पण-आईना-मिरर

लार्सन एण्ड टुब्रो मजदूर : "आजकल फैक्ट्री में बहुत कम काम करवा रहे हैं – बाहर 5-7 ठेकेदार हैं, उन से ठेके पर काम करवाते हैं। फैक्ट्री में काम तो कम दे रहे हैं पर परेशान करने में कोई कमी नहीं छोड़ रहे – वरकर को कभी इधर फेंक देते हैं, कभी उधर फेंक देते हैं।"

आदर्श फैब्रिकेटर वरकर : "तनखा में 1200-1500-1800 रुपये ही देते हैं और वह भी 15-20 तारीख को जा कर। हम 40-45 में से ई.एस.आई. कार्ड बस 2-4 को दी है और यही हाल प्रोविडेन्ट फण्ड का है। फैक्ट्री में चोट लगने पर थोड़ा-बहुत प्रायवेट इलाज करवा देते हैं अन्यथा नौकरी से निकाल देते हैं।"

वी एक्स एल मजदूर : "मैनेजमेन्ट ने परमानेन्टों से ज्यादा कैजुअल वरकर इस समय रखे हैं और कैजुअलों से दुगने से भी ज्यादा उत्पादन ले रही है। लफड़े के लिये मैनेजमेन्ट ने हर डिपार्टमेन्ट में 2-3 ठेकेदार के मजदूर भी रखे हैं।"

नगर निगम ट्यूबवैल ऑपरेटर : "किसी कारणवश कोई ड्युटी नहीं आ सके तो अन्य को बुलाने भी नहीं जा सकते क्योंकि कई ट्यूबवैलों के दरवाजे तक नहीं हैं। 16-24 घण्टे तक ड्युटी की आफत आ जाती है जबकि ओवर टाइम काम के कोई पैसे भी नहीं देते। ट्यूबवैलों पर कुर्सी तक नहीं हैं – कई जगह आपस में चन्दा करके हम बैठने को टेबल लाये हैं। बल्ब फ्यूज हो जाये तब अपने पैसे से लाओ क्योंकि स्टोर में बल्ब, ट्युब, होल्डर, कुछ नहीं है। जिन सफाई कर्मचारियों को ट्यूबवैल ऑपरेटर बनाया है उनकी तो और भी दुर्गत है। उन्हें कोई ट्रेनिंग नहीं दी है, साप्ताहिक के अलावा उन्हें कोई छुट्टी नहीं देते, वेतन की बजाय उन्हें वेतन एडवान्स के नाम से 1500 रुपये देते थे जिसे अब 1956 किया है लेकिन फाल्ट होने पर सारे नियम-कानून लगा देते हैं। जो पढ़े-लिखे हैं उनमें से किसी को अनपढ तो किसी को आठवीं पास मनमर्जी से लिख दिया है ताकि आगे चल कर तरक्की नहीं देनी पड़े। ट्यूबवैलों की मेन्टेनैन्स सिर्फ कागजों में होती है।"

मोहता इलेक्ट्रो स्टील वरकर : "मैं और मेरा मित्र संयुक्त रूप से यह समझ नहीं पा रहे कि भिवानी की मोहता इलेक्ट्रो स्टील फैक्ट्री का ताला कब खुलेगा? और ताला लगा ही क्यों? पाँच वर्ष पूर्व अच्छा खासा मुनाफा कमाने वाली यह फैक्ट्री तालाबन्दी के दायरे में आ गई। मजदूरों की कोई नहीं सुनता और 20-25 वर्ष की नौकरी के बाद भागाँ के भरोसे घर बैठने को कह रहे हैं।"

स्टडस हेल्मेट मजदूर : "हम 126 परमानेन्ट में से 66 की छँटनी की इजाजत मैनेजमेन्ट ने सरकार से माँगी है। तीन जून और फिर 9 जून को तारीख थी। इधर फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट ने अलग-थलग अकेले मजदूरों की पिटाई करवा कर उनकी घड़ी आदि छिनवाई हैं। संग ही संग मजदूरों के खिलाफ शिकायतें लिखवाने को मजबूर करने के लिये मैनेजमेन्ट ने सेक्युरिटी गार्डों की पिटाई करवाई है।"

वर्कशॉप वरकर : "मुजेसर में एक वर्कशॉप में पावर प्रेस पर हाथ कटने से तो बच गया पर पूरा हाथ चिर-फट गया था। ई एस आई-वी एस आई नहीं थी, प्रायवेट में इलाज करवा कर निकाल दिया। अब संजय मेमोरियल में वर्कशॉप में लगा हूँ। कहने को यह प्रायवेट लिमिटेड है पर यहाँ भी न ई एस आई है और न फण्ड तथा न ही न्यूनतम वेतन देते हैं – महीने के 1300-1400 रुपये ही देते हैं।"

सुरभि इन्डस्ट्रीज मजदूर : "स्टाफ समेत परमानेन्ट वरकर 50 हैं और ठेकेदार के हम 100 मजदूर हैं। हैल्पर को 1400 और ऑपरेटर को 1800 रुपये वेतन है। ई.एस.आई. नहीं है और न फण्ड। ठेकेदार दिल्ली रहता था। मई के आरम्भ में पावर प्रेस पर एक वरकर की तीन उँगलियाँ कट गई। मैनेजमेन्ट ने शर्मा नर्सिंग होम में प्रायवेट इलाज करवाया और फिर ड्युटी पर लेने से यह कह कर इनकार कर दिया कि ठेकेदार से बात करो। लेकिन इस बीच मैनेजमेन्ट ने ठेकेदार बदल दिया था। ऐसे में ठेकेदार बोला कि मैं तो नया हूँ, पुराने ठेकेदार से बात करो। हाथ कटा वरकर सड़क पर है।"

सुपर ऑयल सील वरकर : "मार्च-अप्रेल-मई की तनखायें आज 12 जून तक नहीं दी हैं। 98-99 का बोनस उन्हीं को दिया है जिनके बेसिक व डी.ए. का जोड़ 3500 रुपये से नीचे है। जूते-वर्दी-गिफ्ट नहीं ... एल टी ए नहीं दिया है। जो कह रहे थे हो गया-हो गया वह ऐसे ही था, नेताओं का प्रचार था।"

एलसन कॉटन मिल मजदूर : "5 साल से फैक्ट्री बन्द है। कम्पनी ने प्रोविडेन्ट फण्ड फार्म भरने के लिये भी कोई नहीं रखा है। एक सेक्युरिटी फार्म भरने के खुलेआम 50 रुपये माँगता है। प्रोविडेन्ट फण्ड आफिस में बिना पैसे लिये काम नहीं करते –अपने ही पैसे निकलवाने के लिये रिश्वत दो।" **(बाकी पेज तीन पर)**

कम्पनियाँ किसी की नहीं होती

आर.एम.आई. मजदूर : "मैंने 20 वर्ष आर.एम.आई. राजपुरा (पँजाब) में साइकिल फैक्ट्री की दिलोजान से सेवा की और प्रबन्धकों के खिलाफ किसी की एक न सुनी। यहाँ तक कि यूपी-बिहार व राजस्थान के अनेकों कमेरों का मैंने शोषण भी किया। और अब जब मैं पूर्णतया निचुड़ गया हूँ तब कम्पनी ने मुझे दूध से मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिया है।"

एस्कोर्ट्स वरकर : "ए बी सी कन्सलटैन्ट्स आजकल मैनेजरों के इन्टरव्यु ले रहे हैं। मैनेजर बहुत घबराये हुये हैं। अपनी-अपनी नौकरी बचाने के लिये साहब लोग बहुत चौकस हैं लेकिन सुरक्षित कोई नहीं है। कुछ सीनियर मैनेजर आजकल दिखाई नहीं देते। कई लोग कह रहे हैं कि कम्पनी ने उन्हें छुट्टी पर भेज दिया है, निकाल दिया है।"

अनुभव-समझ-नये अनुभव... (पेज दो का शेष)

लिये नुकसानदायक है। गुस्सा आता है पर सीधे मुँह पर बोल भी नहीं सकते। सच बोलना गुनाह है। जो बोले हैं उन्हें मैनेजमेन्ट-यूनियन ने निकाल दिया है। सीधे बोलने का मतलब नौकरी के लिये आफत है इसलिये जो करना है वह चुपचाप करना बनता है।"

के एस टी एक्सटुडर मजदूर : "हम में से दो तेज वरकरों ने यूनियन बनवाई। फिर मैनेजमेन्ट-यूनियन एग्रीमेन्ट से के एस टी, बी एस टी, बी एस टी इन्टरप्राइज और अमरप्रीत नाम से कम्पनियाँ बना दी और हर एक में 5-6 वरकर रख दिये। हमारी परेशानियाँ बढा कर लीडर पैसे ले कर चलते बने।"

एस्कोर्ट्स वरकर : "मैनेजमेन्ट ने फार्मट्रैक प्लान्ट में 12 जून से इन्सपैक्टरों-चार्जहैन्डों-सैट्टरों से मशीनें चलाने को कहा। यह उनका निर्धारित कार्य नहीं है इसलिये उन्होंने इनकार कर दिया और लीडरों ने भी उन्हें मशीनें चलाने से मना किया। इस पर मैनेजमेन्ट ने 'काम नहीं, वेतन नहीं' के नोटिस लगाने शुरू कर दिये। मैनेजमेन्ट ने मैनेजरों से मशीनों की सैट्टिंग करवाई और स्पेयर करार दे कर जिन मजदूरों को बैठा रखा था उन्हें मशीनों पर लगा दिया। वैसे भी मैनेजमेन्ट को इस समय उत्पादन बहुत कम चाहिये – फार्मट्रैक में जहाँ निर्धारित उत्पादन 2600 ट्रैक्टर प्रतिमाह है वहाँ जून में मैनेजमेन्ट ने 900 ट्रैक्टर ही बनवाये और जुलाई में 700 की चर्चा है। ऐसे में इन्सपैक्टरों-चार्जहैन्डों-सैट्टरों ने अपने को फँसते देख 26 जून से मशीनें चलानी शुरू कर दी। लीडर कहते रहे कि मत चलाओ, हम बात कर रहे हैं पर उन्होंने कहा कि दस दिन बातचीत नहीं की तो अब क्या करोगे और आपस में बैठ कर ही मशीनें चलाने का तय कर लिया।"

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये

★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये।

★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार ही छाप पाते हैं और 5000 प्रतियाँ ही फ्री बाँट पाते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें।

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

यू. के. इंजिनियरिंग मजदूर : "कैजुअल वरकरों को 1000-1200 रुपये वेतन देते हैं। न ई.एस.आई. है, न फण्ड।"

बी.आर. पैकेजिंग वरकर : "फैक्ट्री पृथला गाँव के पास है। हैल्परों को 1200 रुपये महीना वेतन देते हैं।"

जगसन पाल फार्मास्युटिकल्स मजदूर : "150 वरकर ऐसे हैं जो 3-4 साल से लगातार काम कर रहे हैं पर फिर भी मैनेजमेन्ट उन्हें कैजुअल ही कहती है।"

इन्जेक्टो वरकर : "मई का वेतन 16 जून को देना शुरू किया है और कई दिन लगा देंगे सब को देने में।"

रही है। हितकारी पॉट्रीज तो बन्द पड़ी है, उसे मैनेजमेन्ट ने अभी तक खोला ही नहीं है।"

निप्पुन क्रेन मजदूर : "3-4 महीनों से फैक्ट्री फिर चालू है। हम 35-40 कैजुअल हैं। रोज साढे नो घण्टे ड्युटी ले ते हैं, कभी-कभी तो रात 8 बजे तक रोक लेते हैं पर ओवर टाइम काम के कोई पैसे नहीं देते। न प्रोविडेन्ट फण्ड है और न ई.एस.आई. कार्ड दिये हैं।"

आर.आर. इन्डस्ट्रीज वरकर : "मथुरा रोड़ प्लान्ट में हम 125 वरकर हैं और हमें 1200 रुपये महीना तनखा देते हैं। 15-20 को छोड़ कर न किसी की ई.एस.आई. है और न फण्ड।"

चाँद इन्डस्ट्रीज मजदूर : "अप्रेल का वेतन

फैक्ट्री में मार-पीट भी करता रहता है।"

नेपको बेवल गियर मजदूर : "आज 17 जून तक मई का वेतन नहीं दिया है। ऑपरेटरों को हैल्पर ग्रेड देते हैं। 1996 से अब तक करवाये ओवर टाइम काम के पैसे नहीं दिये हैं।"

सेक्युरिटी गार्ड : "हमारा एक साल का प्रोविडेन्ट फण्ड जमा नहीं करवाया और दहिया सेक्युरिटी बन्द कर दी।"

इग्निटोस इण्डिया वरकर : "महीने की तनखा 1200-1300 रुपये ही देते हैं।"

लखानी शूज मजदूर : "कैजुअल वरकर थोक में रखते हैं पर कैजुअलों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। कम्पनी को जब जरूरत होती है

मैनेजमेन्टों की लगाम

हर कार्यस्थल पर हजारों तार होते हैं; हजारों नट-बोल्ट होते हैं; नालियाँ-सीवर होते हैं; कई-कई ऑपरेशन होते हैं; रात-दिन को लपेटे शिफ्टें होती हैं। इसलिये मैनेजमेन्टों को रोकने-डाटने के लिये मजदूरों के हाथों में कारगर लगाम हैं: ✱ पाँच साल दौड़ने वाली मशीनें छह महीनों में टें बोल दें; ✱ कच्चा माल-तेल-बिजली उत्पादन के लिये आवश्यक मात्रा से डेढी-दुगनी इस्तेमाल हो; ✱ ऑपरेशन उल्टे-पल्टे हो कर क्वालिटी को गँगा नहा दें; ✱ बिजली कभी कड़के, कभी दमके, कभी आँख-मिचौनी करने मक्का-मदीना चली जाये; ✱ अरजेन्ट मचा रखी हो तब ऐसे ब्रेक डाउन हों कि साहबों को हृदय रोग हो जायें।

बिना किसी प्रकार की झिझक के, शान्त मन से, ठन्डे दिमाग से सोच-विचार कर कदम उठाने चाहियें।

इंडिया फोरजिंग मजदूर : "कैजुअल वरकरों को 1300 रुपये महीना वेतन देते हैं।"

पोलर फैन वरकर : "कैजुअलों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और फण्ड भी नहीं है।"

एस.के.एन. मजदूर : "तनखा बहुत कम देते हैं — महीने के 1550 रुपये ही देते हैं।"

हितकारी चाइना वरकर : "जनवरी की आधी तनखा बकाया थी और उसकी आधी, यानि 700 रुपये कल 9 जून को जा कर दिये — बाकी कब देंगे पता नहीं। इधर तीन महीनों की तनखा और बकाया हो गई है तथा अब काम नहीं है कह कर 20 दिन से मैनेजमेन्ट ले-ऑफ लगा

पहली जून को जा कर दिया। आज 10 जून तक तो मैनेजमेन्ट मई की तनखा का जिक्र तक करने को तैयार नहीं है।"

लाल मिल वरकर : "हैल्परों को 1500 रुपये महीना ही देते हैं। न ई.एस.आई. कार्ड है और न फण्ड।"

राज टैक्सटाइल्स मजदूर : "10 घण्टे रोज ड्युटी लेते हैं। न ई.एस.आई. है, न फण्ड।"

टैक्नो फोरजिंग वरकर : "महीने का 1200 रुपये वेतन है। न ई.एस.आई. है, न फण्ड। ओवर टाइम पेमेन्ट सिंगल रेट से है। चोट लगने पर बराये नाम इलाज करवा देते हैं। डायरेक्टर

तब ओवर टाइम के लिये जबरदस्ती रोकती है पर ओवर टाइम की पेमेन्ट डबल की बजाय डेढे रेट से देती है। पहले तनखा के साथ ओवर टाइम के पैसे देती थी पर अब 28-30 तारीख को जा कर देती है।"

जी.बी.एम. वरकर : "कैजुअलों को 1450 रुपये महीना ही देते हैं। रोज 4 घण्टे ओवर टाइम काम करना पड़ता है जिसकी पेमेन्ट डबल की बजाय सिंगल रेट से देते हैं।"

पाँच भाई साबुन मजदूर : "हमें ठेकेदार के वरकर कहते हैं और सौ किलो साबुन बनाने पर 5 रुपये 25 पैसे देते हैं।" ■

दर्पण-आईना-मिरर..... (पेज दो का शेष)

टैक्सको टूल्स वरकर : "मई का वेतन आज 17 जून तक नहीं दिया है। कुल 365 मजदूरों में से 165 परमानेन्ट हैं और बाकी कैजुअल जिनकी न ई.एस.आई. है, न फण्ड। परमानेन्ट हो चाहे कैजुअल, ओवर टाइम काम के पैसे सिंगल रेट से ही देते हैं। परमानेन्टों को बाहर करने के चक्कर में रहती है मैनेजमेन्ट।"

गुडईयर मजदूर : "ठेकेदार ने हम 100 वरकरों को जनवरी से मई तक की पाँच महीनों की तनखायें आज 17 जून तक नहीं दी हैं। हम पैसे माँगते हैं तब ठेकेदार कहता है कि कम्पनी से पैसे नहीं मिले हैं।"

सुपर ऑटो इलेक्ट्रिकल्स वरकर : "मैं, दिलीप कुमार, मार्च में सुपर ऑटो में वैल्डिंग के काम पर लगा था। तनखा माँगने पर मुझे 7 जून को नौकरी से निकाल दिया। मुझे अप्रेल, मई और 6 दिन जून का वेतन आज पहली जुलाई तक नहीं दिया है — दो-चार दिन की कह कर टालते रहते हैं।"

ललित फैब्रिक्स मजदूर : "साढे पाँच साल से फैक्ट्री बन्द है और हम 450 मजदूर इधर-उधर मारे-मारे फिर रहे हैं। अदालतों में फैसले हो गये हैं पर न तो फैक्ट्री खोल रहे हैं और न हमारे पैसे ही दे रहे। इधर बैंकों ने फैक्ट्री पर अपने गार्ड लगा दिये हैं।"

खेमका इस्पात वरकर : "साल-भर पहले खेमका अलॉय बन्द कर दिया और सब वरकरों को खेमका इस्पात में कर दिया। दस महीने हमें फण्ड की पर्ची नहीं मिली और अब मिली है तो फण्ड नम्बर बदला हुआ है। कम्पनी ने आई.एस.ओ. ले लिया है और लगता है कि संग-संग हमारी पुरानी सर्विस खा गई है।"

दुजोधवाला इन्डस्ट्रीज मजदूर : "दिसम्बर 99 की तनखा हमें मार्च में जा कर दी। जनवरी

से ले-ऑफ लगा रहे हैं — महीना पूरा होन पर मैनेजमेन्ट रात को ले-ऑफ का नोटिस लगा देती है। जनवरी से मई के ले-ऑफ के पैसे आज 10 जून तक नहीं दिये हैं। श्रम विभाग में यूनियन लीडर तारीखों पर जाते रहते हैं।"

फरीदाबाद फैब्रिकेशन वरकर : "सब मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया और अब नये नाम से तथा नये मजदूर रख कर काम शुरू कर दिया है।"

प्रताप स्टील मजदूर : "चार साल से फैक्ट्री बन्द पड़ी है। इधर दो महीनों की बकाया तनखा दे कर मैनेजमेन्ट ने बहुत से मजदूरों से कोरे कागज पर हस्ताक्षर करवा लिये हैं यह कह कर कि हिसाब का चेक देंगे।"

ग्लोब कैपेसिटर वरकर : "दस घण्टे की ड्युटी है। सुबह 8 से रात साढे आठ तक काम करवाते हैं और 2 घण्टे ओवर टाइम के लिखते

(बाकी पेज चार पर)

क-ख-ग 3

मजदूरों द्वारा किये जाते उत्पादन की हिस्सा- बाँट का पता करने के लिये विश्व के विभिन्न क्षेत्रों की उत्पादन इकाईयों का जायजा लिया गया। औसत निकालने पर यह तथ्य उभरे :

(i) मजदूरों द्वारा किये जाते उत्पादन का साठ प्रतिशत के करीब सरकारें टैक्सों के रूप में ले लेती हैं। यूँ तो टैक्स अनगिनत व अनन्त प्रकार के हैं पर इनमें प्रमुख हैं एक्साइज व कस्टम ड्युटी जो कि अकेले ही मजदूरों द्वारा किये जाते उत्पादन का 10 से 40 प्रतिशत हड़प लेते हैं।

(ii) कम्पनियों में लगते पैसों का 80- 85 प्रतिशत कर्ज होता है। मजदूरों द्वारा किये जाते उत्पादन का 10- 15 प्रतिशत बैंक व वित्तीय संस्थायें ब्याज के रूप में वसूल लेते हैं।

(iii) बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के तहत चेयरमैन- मैनेजिंग डायरेक्टर- जनरल मैनेजर -मैनेजर वाली मैनेजमेन्ट कम्पनी के बही- खातों में दिखाये बिना दो नम्बर में पैसे बनाते हैं। मैनेजिंग डायरेक्टर आदि पद- सत्ता अनुसार हिस्सा- पत्ती लेते हैं और मजदूरों द्वारा किये जाते उत्पादन में से कट- कमीशन के रूप में 10- 15 प्रतिशत गड़प जाते हैं।

(iv) कम्पनियों में लगते पैसों का 10- 15 प्रतिशत शेयरों से होता है। मजदूरों द्वारा किये जाते उत्पादन का 5- 10 प्रतिशत शेयर होल्डर डिविडेन्ड के रूप में ले लेते हैं।

(v) मजदूरों द्वारा किये जाते उत्पादन का 5- 7 प्रतिशत कम्पनियों के विस्तार में खप जाता है।

(vi) मजदूरों द्वारा किये जाते उत्पादन का एक-दो प्रतिशत मजदूरों को मिलता है।

चूँकि मजदूरों द्वारा किये जाते उत्पादन का प्रमुख हिस्सा सरकारें, बैंक, मैनेजमेन्ट और कम्पनियाँ हड़पती हैं इसलिये मजदूरों द्वारा इनसे भलाई की उम्मीदें करना नादानी है। सरकारों और मैनेजमेन्टों के सिरदर्द बढा कर ही मजदूर राहतें हासिल कर सकते हैं।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी.फरीदाबाद—121001

खट्टा-मीठा

रेबेस्टोस मजदूर : "आज 17 जून को हमारे गेट मीटिंग है। गेट मीटिंगों में मजेदार बात यह रहती है कि मैनेजमेन्ट के दल्ले ही मैनेजमेन्ट को गालियाँ देते हैं।"

सेराटैक (नोएडा) वरकर : " मैनेजमेन्ट ने रिकार्ड तोड़ा है। सात साल में पहली बार तनखा टाइम पर दी है — मई का वेतन 7 जून को दिया।"

रिटायर मजदूर : "40 साल बाटा फैक्ट्री में काम किया। अब बेकरी का सामान साइकिल पर लाद कर सप्लायर का काम कर रहा हूँ। जमाना ऐसा आ गया है कि पेट के लिये इस उमर में भी यह करना पड़ रहा है। बच्चों को अपने से ही फुर्सत नहीं — ऐसे में उनके आगे हाथ फैलाने से अच्छी है यह सप्लायर वाली परेशानी।"

एस्कोर्ट्स वरकर : "इन्सपैक्टरों को मैनेजमेन्ट मशीनों पर लगा रही है। टीम वर्क, टीम मेम्बर कह कर इन्सपैक्टरों को तेल साफ करने, कचरा सफाई करने, ऑपरेटर को पानी पिलाने, उसके जूते पालिश करके टिप- टॉप करने में लगा रही है। मैनेजमेन्ट कहती है कि आई एस ओ कम्पनी है इसलिये पूरी टीम के जूते साफ होने चाहियें, चमकने चाहियें।" ■

दर्पण-आईना-मिरर...(पेज तीन का शेष)

हैं। तनखा 1300 रुपये महीना से शुरू करते हैं। नौकरी के 5 साल पूरे नहीं होने देते, पहले ही निकाल देते हैं।"

उषा टेलिहोइस्ट मजदूर : "इस समय काम कम है। ले- ऑफ की चर्चा है। मैनेजमेन्ट फिर छँटनी करने की फिराक में है और सस्ते में यह करने के लिये फैक्ट्री बन्द हो जाने का डर दिखा रही है "

स्काईटोन केबल्स वरकर : " 5- 6 साल से लगातार काम कर रहे 80 मजदूरों को मैनेजमेन्ट कैजुअल कहती है। कुछ को छोड़ कर बाकी की न ई. एस.आई. है और न फण्ड। ई.एस.आई. कार्ड के लिये लेबर इन्सपैक्टर को शिकायत की तो मैनेजमेन्ट ने 10 कैजुअल निकाल दिये। "

ओलम्पिया एक्सेलेन्स मजदूर : " रजिस्टर में 1904 पर हस्ताक्षर करवाते हैं पर हैल्परों को 1200- 1300 तथा ऑपरेटरों को 1400- 1500 रुपये वेतन ही देते हैं। सात तारीख से पहले तो तनखा कभी दी ही नहीं है — पहले 20 को देते थे पर अब एक साल से 29 तारीख को जा कर देते हैं।"

नियमो वरकर : " फोरजिंग का काम है, भट्ठी पर तपना पड़ता है। ठेकेदार ने मुझे 8 घण्टे के 1700 रुपये महीना तथा ओवर टाइम अलग से कह कर काम पर रखा पर दिये 1600 ही और वह भी 12 घण्टे के। मैंने कहे अनुसार पैसे देने को कहा तो मुझे निकाल दिया। ऐसा रिवाज बना रखा है। न ई.एस.आई. है, न फण्ड।"

ओमेगा ब्राइट स्टील मजदूर : " दो ठेकेदार हैं और उनके 150 वरकर हैं। तीन महीने लगाने के लिये ठेकेदार हर वरकर से 300 रुपये लेते हैं। फण्ड व ई. एस.आई. के पैसे काटते हैं पर ज्यादातर को ई.एस. आई. कार्ड नहीं देते। निकाल दिये जाने पर जिन्होंने फण्ड का फार्म भरा है उन्हें प्रोविडेन्ट फण्ड वालों ने 3- 4 महीने बाद भी कोई पैसे नहीं दिये हैं।" ■

वाह !

चैकर मजदूर : "ओखला में एक एक्सपोर्ट फैक्ट्री में सिले कपड़ों की फाइनल चैकिंग में हम 12 चैकर थे। हम सब कैजुअल वरकर थे और मैनेजमेन्ट ने हमें जूनियर तथा सीनियर चैकर में बाँट रखा था। जूनियर- सीनियर के नाम से हम में काफी लफड़ा चलता रहता था। आहिस्ता- आहिस्ता हमें जूनियर- सीनियर का वास्तविक अर्थ समझ में आया। हमारे बीच विचार- विमर्श बढे। हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि हाथ चलते रहें और काम रुकता रहे। फिर क्या था! हम एक- दूसरे से कोई बात नहीं करते थे और काम में लगे रहते थे। इसके चलते हमारी डिपार्टमेन्ट में दो महीनों के अन्दर चार सुपरवाइजर बदले गये और एक प्रोडक्शन मैनेजर भी। मैनेजमेन्ट सिर पटकती रही पर हमारे चलते हाथ और रुकते काम के सम्मुख लाचार हो गई। इस पर हम कैजुअल वरकरों के 200 रुपये प्रतिमाह मैनेजमेन्ट ने बढाये।"

और बातें यह भी

ओसवाल स्टील मजदूर : " कम्पनी यहाँ से काम लुधियाना ले जा रही है। वहाँ पूरी ठेकेदारी है। यहाँ पर किसी की नौकरी नहीं बचेगी। कम्पनियों के अजीब तरीके बनते जा रहे हैं आया कोई कायदा- कानून हो ही नहीं।"

एमफोर्ज वरकर : " काम कम है कह कर सप्ताह में 5 दिन ड्युटी कर दी है लेकिन हर रोज की ड्युटी 8 से बढा कर 9 घण्टे की कर दी है।"

झालानी टूल्स मजदूर : " बी आई एफ आर ने अखबारों में नोटिस छपवाया है। नोटिस में कहा गया है कि कम्पनी की हालत इतनी खस्ता है कि कोई भी इसमें पैसे डालने के लिये तैयार नहीं है। ऐसे में बी आई एफ आर ने कम्पनी को बन्द करने का निश्चय किया है। कोई एतराज अथवा सुझाव के लिये 17 जुलाई की तारीख रखी है। फिर भी, झालानी टूल्स के कई मजदूर धड़ाके से कम्पनी चलने की बातें कर रहे हैं और अब भी बेगार करना जारी रखे हुये हैं।"

टेकमसेह वरकर : " 'अपनी नौकरी बच जायेगी अगर दूसरे चले जायें' की बेहूदी सोच से घनचक्कर बनते मजदूर भूल जाते हैं कि छँटनी के सिक्के का दूसरा पहलू वर्क लोड में भारी वृद्धि है। मैनेजमेन्ट और घनचक्कर मजदूर कितनी ही गाल बजायें पर तथ्य यह है कि वरकर नौकरी नहीं छोड़ रहे। इसीलिये मैनेजमेन्ट हैदराबाद ट्रान्सफर, महिला मजदूरों की सुबह 6 बजे झाड़सेंतली प्लान्ट में ड्युटी, थोक में सस्पैण्ड, एग्रीमेन्ट द्वारा बढाये 31 प्रतिशत वर्क लोड में सैटलमेन्ट द्वारा 33 प्रतिशत और वृद्धि, लन्च में गेट से बाहर जाने पर रोक, बसों में भेड़- बकरियों की तरह ठूँसना आदि हथकन्डों पर उतरी हुई है। संग- संग मैनेजमेन्ट ने वी आर एस की फिर आखिरी 'अन्तिम' तारीख 22 जून रखी है।" ■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।